(प्रातः क्लास 12-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

रूहानी बाप कह रहे हैं कि आत्माभिमानी होकर बैठना है। अथवा देही अभिमानी होकर बैठना है। किसको याद करना है। बाप को। सिवाय बाप के और कोई को भी याद न करना है। जब कि बाप से बेहद का वरसा मिलता है तो उनको ही याद करना है। बेहद का बाप आकर समझाते हैं देही-अभिमानी भव। आत्म-अभिमानी भव। देह अभिमान को छोड़ते जाओ। आधा कल्प तुम देह अभिमानी होकर रहे हो। फिर आधा कल्प देहीअभिमानी होकर रहना है। सतयुग त्रेता में तुम देही अभिमानी होकर रहते हो। वहां यह भूलना रहता है हम आत्मा हैं। अभी यह शरीर बड़ा हुआ है इनको अभी छोड़ते हैं। यह बदली करना है। (सर्प का मिशाल।) तुम भी पुराने शरीर छोड़ कर जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करते हो। इसलिए तुमको अभी आत्मअभिमानी बनना है। वह कब देह अभिमानी बनते नहीं। भल एक बार आते हैं फिर भी देहअभिमानी बनते नहीं। क्योंकि यह शरीर तो पराया लोन लिया हुआ है। इस शरीर से उनकी लागत नहीं है। लाने लेने वाले की लागत नहीं रहती है। जानते हैं यह तो शरीर छोड़ना है। बाप समझाते हैं मैं ही आकर तुम बच्चों को पावन बनाता हूं। तुम सतोप्रधान थे सो फिर तमोप्रधान बने हो। अभी फिर पावन बनने लिए तुमको अपन साथ योग लगाना सिखाता हूं। योग अक्षर न कहो याद अक्षर ठीक है। याद सिखाता हूं। बच्चे बाप को याद करते हैं। अभी तुमको भी बाप को याद करना है। आत्मा ही याद करती है। जब रावण राज्य शुरू होता है तो तुम बच्चे देह अभिमानी बन जाते हो। फिर बाप आकर तुमको देही अर्थात आत्म-अभिमानी बनाते हैं। देह अभिमानी होने से फिर नाम-रूप में फंस जाते हैं। विकारी बन जाते हैं। नहीं तो तुम सभी थे निर्विकारी। फिर पुनर्जन्म लेते लेते विकारी बन जाते हो। ज्ञान किसको भक्ति किसको कहा जाता है यह तो बाप ने समझाया है। भक्ति शुरू होती है द्वापर से। जब कि 5विकारों रूपी रावण की स्थापना होती है। भारत में ही रामराज्य और रावण राज्य कहा जाता है। परन्तु यह नहीं जानते कि रावण राज्य किसको रामराज्य किसको कहा जाता है। कितना समय रामराज्य कितना समय रावण राज्य चलता है यह भी कोई नहीं जानते। इस समय भारतवासी है तमोप्रधान पत्थर बुधि। पैदा भी भ्रष्टाचार से, विष से होते हैं। इसलिए विषस वर्ल्ड कहा जाता है। नईदुनिया को वायसलेस वर्ल्ड कहा जाता है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में रात दिन का फर्क है। नई दुनिया में सिर्फ भारत ही था। भारत जैसा पवित्र खण्ड कोई बन नहीं सकता। जो पिवत्र वही फिर बिल्कुल अपवित्र बनता है। फिर पवित्र बनना है। तुम जानते हो बरोबर देवी देतवांए पवित्र थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 अपवित्र बन गये हैं। सब से जास्ती जन्म भी यही लेते हैं। बाप समझाते हैं मै बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त के जन्म में आता हूं। यह पहना नम्बर ही 84वां जन्म पूरा कर वानप्रस्त अवस्था में आता हैं। तब मैं प्रवेश करता हूं। त्रिमूर्ति ब्रहमा विष्णु शंकर भी है। परन्तु किसको मालूम नहीं है। क्योंकि देह अभिमानी है ना। किसकी भी वायोग्राफी का किसी मनुष्य मात्र को पता नहीं हैं। पूजा करते हैं परन्तु अन्धश्रधा। इसलिए बाप ने कहा है अन्धों के औलाद अंधे। अभी तुम सजे बन रहे हो। भक्ति को कहा जाता है ब्राहमणों की रात। और सतयुग त्रेता है ब्राहमणों का दिन। अभी प्रजापिता ब्रहमा है तो जरूर बच्चे भी होंगे। यह भी समझाया है ब्राहमणों का कुल होता है। डिनायस्टी नहीं। ब्राहमण है चोटी। चोटी भीदेखने में आते हैं। फिर ऊंच ते ऊंच पढ़ाने वाला है परमपिता परमात्मा शिव। उनका नाम एक ही है। परन्तु भक्ति मार्ग में अथाह नाम लगा देते हैं। भक्ति में चिहचर बहुत हो जाता है। कितने चित्र, कितने मंदिर, यज्ञ तप दान पूण्य आद करते है। कहते हैं भक्ति से फिर भगवान मिलता है। किसको मिलता है? जो पहले आते हैं। वही पहले2 भक्ति शुरू करते हैं। जो ब्राहमण सो देवता बनते हैं। वही फिर पहले2 भक्ति मार्ग में जाते हैं। यह हिसाब भी बाप समझाते हैं। भारत बहुत पवित्र था। एक धर्म था। राजा रानी तथा प्रजा। सर्व गुण सम्पन्न ... देवी देवता धर्म था। भारत में एक ही आदी सनातन देवी देवता धर्म था तो अथाह धन था। बाप याद है

दिलाते हैं। पहले2 तुम आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हो। सभी नहीं लेते हैं। है सिर्फ 84 जन्म। वह फिर कहन देते 84 लाख जन्म। कितना बड़ा गपोड़ा है। कल्प की आयु ही लाखों वर्ष कह दी है। बाप कहते हैं यह है ही 5000 वर्ष का ड्रामा। तो यह भी अज्ञान ठहरा ना। भक्ति मार्ग है ही अज्ञान मार्ग। ज्ञान सागरतो एक ही शिव बाबा गाया जाता हैं। वह हैं हद के बाबाएं। यह है बेहद का बा बा। हद के बाबा होते भी बेहद के बाबा को याद करते हैं। जब कि दुःखी होते हैं। पुनर्जन्म लेते2 दुनिया पुरानी तमोप्रधान हो जाती है। तब फिर बाप आते हैं। सेकण्ड में जीवन मुक्ति मिलती है। किस से? बेहद के बाप से। तो जरूर अभी जीवन बन्ध में हैं। पतित हैं फिर पावन बनना हैं। यह तो सेकण्ड की बात है। ज्ञान एक ही सेकण्ड का है। क्योंकि पढ़ाई तो तुम पढ़ते हो। वह सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं। पढ़ती तो आत्मा ही हैं। परन्तु देह अभिमान कारण अपन को आत्मा भूल कर कह देते हैं हम फलाना मिस्टर हैं यह हैं। वास्तव में है आत्मा। आत्मा मिस्टर और मिसेज बनती है पार्ट बजाने लिए। यह भूल जाते हैं। नहीं तो आत्मा ही पार्ट बजाने कोई क्या बनती हैं कोई क्या बनती है। बाप समझाते हैं अभी यह पुरानी दुनिया बदल नई बननी है। वर्ल्ड कीहिस्ट्री जागराफी रिपीट जरूर होनी हैं। नईदुनिया है सतोप्रधान। घर भी पहले नया होता है तो कहेंगे सतोप्रधान। फिर पुराना जड़-जड़ीभूत तमोप्रधान होता है। यह बेहद का नाटक वा सृष्टि के चक्र का नालेज समझना है। क्योंकि यह पढ़ाई है भक्ति नहीं हैं। भक्ति को पढ़ाई नहीं कहा जाता हैं। क्योंकि भक्ति में एक आबजेक्ट कुछ होती नहीं। जन्म-जन्मान्तर वेद शास्त्र आद पढ़ते रहो। यहां तो दुनिया को बदलना है। सतयुग त्रेता में भक्ति नहीं थी। भक्ति शुरू होता है द्वापर से। तो यह बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। इसको कहा जाता है रूहानी नालेज अथवा ज्ञान। रूहानी नालेज कौन सिखलावेंगा। सुप्रीम रूह ही बनावेंगे यानि परमपिता। वह तो सभी का है ना। लौकिक बाप को कब परमपिता नहीं कहेंगे। पारलौकिक को परमपिता कहा जाता है। वह है परमधाम में रहने वाला। बाप को याद भी ऐसे करते हैं हे गाड फादर हे ईश्वर। वास्तव में उनका नाम है एक। परन्तु भक्ति में अनेक नाम दे दिये हैं। भक्ति का फैलाव बहुत है। वह सभी है मनुष्य मत। अभी मनुष्य मत को चाहे ईश्वरीय मत। श्री श्री ईश्वरीय मत। श्री श्री 108 की माला तो बनती है ना। यह प्रवृत्ति मार्ग की माला बनती हैं। निवृति मार्ग वाले श्री श्री का टाईटल अपने ऊपर लगाते हैं। परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। पत्थर बुधि है ना। बिल्कुल बेसमझ है। बाबातुमको भी कहते हैं तुम कितने बेसमझ थे। सब से जास्ती बेसमझ तुम बनते हो। पुनर्जन्म लेते2 सीढ़ी उतरते इनसालवेन्ट बन जाते हैं। बुधि इनसालवेन्ट बन जाती है। तो मनुष्य दिवाला मार देते हैं। मनुष्य मात्र जो 100% सालवेन्ट थे सो इस समय इनसालवेन्ट हैं। बुधि बिल्कुल ही मारी हुई है। यह ताला किसने लगाया है? गाडरेज का ताला लग जाता है भक्ति मार्ग में। कुछ भी नहीं समझते। भक्ति किसकी करते हैं उनका भीपता नहीं है। अच्छा ता0 कौन है। देवताएं तो हैं। परन्तु कहां से आये कहां गये कुछ पता है। इसको कहा जाता है गुड्डियों की पूजा। बाप कहते हैं बिल्कुल बेसमझ जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना। छोटे बच्चे को महात्मा कहा जाता है। वह महात्माएं तो फिर भी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। फिर बड़ा होकर सन्यास करते हैं। छोटे बच्चे को को तो विकार का पता ही नहीं। अभी कलियुग में तो देखो 8-9 वर्ष के बच्चों को भी विकार का पता पड़ जाता है। घोर अंधयारा है ना। घोर सोझरा सतयुग को कहा जाता है। घोर अंधियारा है कलियुग। यह तो चला आता है। राजाई और गधाई। कहां तुमको हीरोईन के वैसे का महल। कहां अभी इनसालवेन्ट बन पड़े हो। भारत जितनानम्बरवन में था उतना और कोई खण्ड नहीं। भारत की बहुत महिमा है। सभी धर्म वालों का भारत सब से बड़ा ते बड़ा तीर्थस्थान है। परन्तु ड्रामा अनुसार गीता का खण्डन कर दिया है। जिस गीता के ज्ञान से बाप बैठ नई दुनिया बनाते हैं। गीता शास्त्र नहीं बनाते, गीता सुनाने वाले पुरानी से नई दुनिया बनाते हैं और सब की सदगति करदेते हैं। भारत सब से ऊंच ते ऊ ऊंच है और बहुत धनवान था। यह उल्टा झाड़ है। उनका बीज है ऊपर में। उसको

वृक्षपति कहा जाता है। बृहस्पत की दशा बैठती है ना। बाप समझाते हैं मैं वृक्षपति आता हूं तोभारत पर बृस्पत की दशा बैठती है। ऊंच बन जाते हैं फिर रावण आता है तो राहू की दशा बैठ जाती है। भारत का क्या हाल हो जाता है। वहां तो तुम्हारी आयु भी बड़ी रहती है। क्योंकि पावन हो। आधा कल्प में तुम 2। जन्म लेते हो। तो अभी बाप समझाते हैं बच्चे तमोप्रधान बनना है। इसलिए मामेकम याद करो। सभी धर्म वाले इस समय तमोप्रधान हैं तुम सभी को यह ज्ञान दे सकते हो। आत्माओं का बाप तो एक ही है। सभी ब्रदर्स हैं। क्यों कि हम सभी आत्माएं एक बाप के ही बच्चे हैं। भल कहते हैं हिन्दु मुस्लिम भाई2 परन्तु अर्थ नहीं समझते। आत्मा कहतो है राईट है। सभी ब्रदर्स का बाप एक है वह आते हैं जरूर। बरसा देना ही है बाबा को। वह आते ही हैं भारत में। शिव जयन्ति मनाते हैं। परन्तु वह कब आया था यह किसको भी पता नहीं है। अन्धश्रधालु हैं ना। रावण सम्प्रदाय आसुरी सम्प्रदाय। तुम्हारी युध है इन 5विकारों से। काम तो तुम्हारा नम्बरवन दुश्मन है। रावण को जलाते हैं परन्तु वह कौन है, क्यों जलाते हैं कुछ भी पता नहीं हैं। तुम जानते हो यह 2500बर्ष से हमारा दुश्मनबना है। दिन प्रति दिन यहदुश्मन बड़ा तीखा हो जाता हैं। द्वापरसे लेकर तुम नरचे उतरते2 इस समय पतित बनगये हो। एक तरफ शिव को याद कर पूजते हैं। दूसरे तरफ फिर कहते हैं कि सर्वव्यापी है। कुत्ते बिल्ले आद सब में हैं। जिसने तुमको विश्व का मालिक बनाया उनको फिर माया के चक्र में आकर गाली देते हो। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों तुम मुझे अनगिनत जन्मों में ले गये हो। मुझे कण कण में ठिकर भर भितर में ठोक देते हो। गालियां भी देते हो। कच्छ अवतार मच्छअवतार। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बिल्कुल ही तमोप्रधान बन जाते हैं। वेहद की ग्लानी में चले जाते हैं। कितने पापात्मा बन पड़े हैं। रावण राज्य है ना। यह भी तुम जानते हो। इस समय सभी भक्तियां है। सभी की सदगति करने वाला कौन है। यह कोई नहीं जानते। शास्त्रों में तो दन्त कथाएं लिख दी हैं। सुनने वाले मनुष्य भी सत्य2 करते रहते। बाप कहते हैं यह सभी असत्य। सत्य कहने वाला तो एक ही बाप है। रावण को झूठ कहेंगे। सच्च खण्ड स्थापन करने वाला सच्चा बाबा है। रावण को बाबा नहीं कहा जाता है। यह तो तुम समझते हो 5विकार हरेक में हैं। विकार से ही पैदा होते हैं। इसलिए भ्रष्टाचारी कहा जाता हैं। सतयुग में विकार का नाम नहीं। देवताओं को कहा हा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। देवतायें जो पूज्य थे वही फिर पूजारी बने हैं। वह कह देते हैं आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। बाप कहते हैं यह भूल है। इनका भी अर्थ बच्चों को समझाया है। पहले2 तो आत्मा निश्चय करना है। हम आत्मा इस समय ब्राहमण कुल के हैं। सर्वोत्तम कुल। ब्राहमणों की डिनायस्टी नहीं हैं। चोटी है ब्राहमणों की। तुम ब्राहमण हो ना। सब से ऊपर में है शिव बाबा। भारत में ही विराट रूप बनाते हैं। परन्तु उसमें न ब्राहमणों की चोटी है न चोटियों का बाप है। अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। त्रिमूर्ति का भी अर्थ नहीं समझते हैं। नहीं तो भारत का कोट ओफ आर्मस त्रिमूर्ति शिव का होना चाहिए। अभी तो यह कांटों का जंगल है तो जंगली जनावरों का कोट आफ आर्मस बना दिया है। जिसमें फिर लिखा है सत्य मेव जयते। सतयुग में तो दिखाते हैं शेर बकरी भीइकट्ठे जल पीते थे। सत्य मेव जयते माना विजय हो। सभी दूध पानीरहते हैं। लून पानी नहीं। रावण राज्य में है लुनपानी। रामराज्य में क्षीर खण्ड हो जाते हैं। इनको कहा ही जाता है कांटों का जंगल। एक दो को पहला नम्बर का कांटा मारते हैं विकार का। बाप कहते हैं काम विकार महाशत्रु है। यह आदि मध्य अन्त दुखदेनेवाला है। नाम ही है रावणराज्य। बाप कहते हैं इन पांच विकारों पर, जीत पहन जगत जोत बनो। यह अन्तिम जन्म निर्विकारी बनो। तमोप्रधान पतित बने हो तो फिर सतोप्रधान पावन बनो। गंगाकोई कोई पतितपावन नहीं हैं। शरीर के मैले तोधर में पानीसे भी उतार सकते हो। आत्मा तो साफ हो नहीं सकती। परन्तु पतीत बुधि यह भी समझते नहीं हैं। भक्ति मार्ग के कितने ढेर के ढेर गुरु हैं।

सद्गुरु तो एक ही है। वह गुरु लोग सद्गुरु नहीं हैं। न टीचर है। टीचर के पास तो एक आबजेक्ट है कि हम क्या बनेंगे। यह सुप्रीम बाप भी है तो सुप्रीम टीचर भी है। सुप्रीम सद्गुरु भी है। सुप्रीम बाप टीचर सद्गुरु एक ही हैं। वही सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नालेज देते हैं। जिस नालेज से तुम क्या बनते हो। यह एम आबजेक्ट सामने खड़ी है। अभी 84 का चक्र पूरा किया है। अभी वापस जाना है। अभी तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। आत्मा भी झूठी तो शरीर भी झूठा। मनुष्य मात्र सभी बर्थ नाट ओनी है। पाउन्ड थे। अभी गरीब बन पड़े हैं। बाप कहते हैं मैं भी गरीब निवाज हूं। आता भी भारत में हूं। आत्मा ही पारलौकिक बाप को पुकारती है। आत्मा जानती है परमपिता परमात्मा हमारा बाप है। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों तुम मुझ बाप को पुकारते हो रहम करो। दुःख हरो। दुःख में ही सभी याद करते हैं। सुख में तो कोई भी याद नहीं करते हैं।

भक्ति मार्ग में कितने शास्त्र आदि पढ़ते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। तुम हो सब से पुराने भक्त। तुम ने ही भक्ति शुरु की। परन्तु अव्यभिचारी शुद्ध भक्ति। फिर चाहिए अव्यभिचारी शुद्ध ज्ञान। वह तो ज्ञान सागर, शिव बाबा ही दे सकते हैं। बाकी वह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्रों की अथार्टी। शिव बाबा को भी अथार्टी कहते हैं। परन्तु वह कोई शास्त्र थोड़े ही पढ़ते हैं। वह तो नालेजफुल है। कहते हैं इन सभी शास्त्रों का सार बताता हूं। तुम्हारे बुद्धि में सारा सृष्टि का चक्र है। इसलिए सीढ़ी भी बनाई है। बाकी भक्ति मार्ग के शास्त्रों में तो कितनी नानसेन्स है। बड़े ते बड़ा हिंसक कृष्ण को बना दिया है। जो नम्बरवन स्वर्ग का प्रिन्स। उनको डबल हिंसक बना दिया है। देवतायें हैं डबलअहिंसक। वह फिर डबलहिंसक बना देते हैं। यह भी कल्प2 चलता आया है। बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। फिर स्वर्ग से पुनर्जन्म लेते2 नीचे आते हो। सभी तो 84 जन्म ले न सकें। कायदा नहीं। मिनीमम है एक। मैक्सीमम है 84। अभी तुम बच्चे हो मैसेन्जर। पैगम्बर। पैगाम पहुंचाने वाले। हरेक को बोलो पारलौकिक बाप कहते हैं तुम्हारी आत्मा जो सतोप्रधान थी अभी तमोप्रधान बन गई है। अभी फिर मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। इनको योग अग्नि कहा जाता है। एक बाप को ही याद करना है। यह है पुरानी दुनिया। अभी चलना है नई दुनिया में। तुम जानते हो बाबा हमारे लिए सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। यह बुद्धि में है। जब तक हम सतोप्रधान बनें तब तक तो यहां ही रहना है। तमोप्रधान कोई जा न सके। यहां ही सतोप्रधान बनना है। दैवी गुण धारण करनी है। कोई भी अवगुण न रहना चाहिए। देवताओं को कहते ही हैं सर्व गुण सम्पन्न। सम्पूर्ण निर्विकारी। अहिंसक मर्यादा पुरुषोत्तम। देवताओं के आगे अपन को कहते हैं हम पापी विकारी हैं। अभी तुमको पता पड़ा है। हम भी ऐसे ही थे। अभी बाप द्वारा हम ऐसे बनते हैं। फिर सो देवता बनते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे। मूल बात ही है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। देह अभिमान छोड़ दो। धंधा आदि व्यापार भल करो बच्चों पास भी भल रहो। परन्तु बुद्धि में यह रहता है यह सभी कब्रदाखिल होनी हैं। इस दुःखधाम को भूल जाना है। याद करना है शान्तिधाम और सुखधाम को। कितना सहज है। क्या यह भी याद नहीं कर सकेंगे। बाबा सा० कराते हैं तुम देवता बनेंगे तो फिर स्वर्ग में होंगे। अभी तो है नर्क। इनको भूलना है। मुश्किल की बात नहीं है। परन्तु माया ऐसी है जो याद करने न देती। बाबा का बनने नहीं देती हैं। माया के साथ ही युद्ध चलती है। बुद्धि योग बाप के साथ टूटने से फिर कुछ न कुछ पाप विकर्म जरुर होते हैं। तुम बच्चे = अभी ब्राह्मण बने हो। फिर बनेंगे देवता। शान्ति धाम में जाकर फिर सुखधाम में आवेंगे। देवता बनेंगे। ब्राह्मण देवता से भी ऊंच ठहरे। तुम्हारा धंधा है सभी भ्रष्टाचारियों को श्रेष्ठाचारी बनाना। फादर शोज सन। सन शोज फादर। बच्चे भी फिर ट्रू वही सेवा करें। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

-: स्वर्ग की बादशाही याद है? :-